DATE
PAGE No 01

टेंडर हार्ट हाई स्कूल, उ३-बी, चण्डीगढ़।
कक्षा - पाँचवी दिनांक - 03 अगस्त, 2020
विषय - हिन्दी साहित्य उपविषय - सीख (दोहे)
अध्यापकों के नाम - श्रीमती रोमा रानी

पाठ - 7 'सीख' (दोहे)

सुप्रभात बच्चो।

आज हम कबीर जी के दोहे पढ़ेंगे जिनमें जीवन में काम आने वाली कोई न कोई शिक्षा दी गई है। छोटी-छोटी बातें हमारे जीवन में बहुत महत्व रखती हैं। कबीर जी के ये दोहे भले ही बहुत पहले लिखे गए, लेकिन इनमें छिपी शिक्षा हमारे जीवन में आज भी काम आती है।

कबीर जी के दोहों का अर्थ -

(क) बड़ा हुआ तो ..... लागे अति दूर ॥

इन पंक्तियों में कबीर जी स्पष्ट कर रहे हैं कि खजूर के पेड़ की तरह बड़े होने में कोई बड़प्पन नहीं है क्योंकि खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होने के कारण न तो किसी आने-जाने वाले को छाया दे पाता है और उसके फल भी बहुत ऊँचे होने के कारण किसी राहगीर के काम नहीं आते अर्थात ऐसे पेड़ की तरह बड़े होने का कोई फायदा नहीं जो किसी के काम ही न आ सके।

(ख) काल करे सो ..... करेगा कब।

इस दोहे में कबीर जी समय के महत्व को बताते हुए

Scanned with CamScanner

टेंडर हार्ट हाईस्कूल, 33 - बी, चण्डीगढ़।
कक्षा - पाँचवी दिनांक - 03 अगस्त, 2020
विषय - हिन्दी साहित्य उपविषय - सीख (दोहे)
अध्यापकों के नाम - श्रीमती रोमा रानी।

पाठ - 7 'सीख' दोहे

कहते हैं कि हमें आज के काम को कल पर न टाल कर अभी कर लेना चाहिए ताकि बहुत देर न हो जाए कि उस काम को करने का समय ही न बचे। कबीर जी कहते हैं कि जिस समय के लिए तुम इस काम को टाल रहे हो क्या पते उससे पहले प्रलय ही न आ जाए फिर तो इस काम को करना असंभव और अर्थहीन हो जाएगा। इसलिए वर्तमान समय का मूल्य समझकर काम को अभी निपटा लो।

ग.) ऐसी बानी बोलिए, - - - - - - - - - आपहु सीतल होय।
कबीर जी मीठी बोली का महत्व बताते हुए कहते हैं कि हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे हमारे अपने मन का अहंकार तो मिट ही जाए साथ ही साथ वह बोल बोलने से दूसरों को सुख की अनुभूति अथवा अनुभव हो। अगर हम ऐसी मीठी वाणी बोलेंगे तो उससे हमारा तन और मन भी शीतलता का अनुभव करेंगे। अर्थात हमें ऐसी बोली बोलनी चाहिए जिससे दूसरों को सुख मिले और खुद भी सुख का अनुभव करें क्योंकि क्रोधवश होकर बोले गए बोलों से न तो खुद को सुख मिलता है और न ही दूसरों को।

घ.) बुरा जो देखन - - - - - - - - - बुरा न कोय।
कबीर जी कहते हैं कि मैं संसार में बुरे मनुष्यों की खोज के लिए निकला था लेकिन मुझे कोई भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। लेकिन जब मैंने अपने

टेंडर हार्ट हाई स्कूल, 33 - बी, चण्डीगढ़।
कक्षा - पाँचवी दिनांक - 03 अगस्त, 2020
विषय - हिन्दी साहित्य उपविषय - सीख (दोहे)
अध्यापकों के नाम - श्रीमती रोमा रानी

पाठ - 7 सीख (दोहे)

मन में झाँक कर देखा तो मुझसे बुरा इस जग में कोई नहीं था। अर्थात हम हमेशा दूसरों की बुराइयों को उजागर करते फिरते हैं लेकिन अपनी बुराइयों की तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते जो हमें ऐसा करने पर उकसा रही हैं।

ङ.) अति का भला ---------- भली न धूप।
कबीर जी जरूरत से अधिक होने वाले नुकसान के बारे में बताते हुए कहते हैं कि न तो हमें जरूरत से अधिक बोलना चाहिए कि कोई ऐसी बात मुँह से निकल जाए जिससे दूसरे हमें बुरा समझें और न ही इतना चुप ही रहना चाहिए कि दूसरे हम पर हावी हो जाएँ।
न तो बादलों का अधिक बरसना अच्छा है जिससे बाढ़ ही आ जाए और न ही अधिक धूप ही अच्छी है जिससे सूखा पड़ जाए। कबीर जी के कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसी अधिकता या बहुतायत का कोई लाभ नहीं जिससे हमें नुकसान हो।

च.) विद्या धन उद्यम ---------- पंखा की पौन
कबीर जी इन पंक्तियों में परिश्रम का महत्व बताते हुए कहते हैं कि परिश्रम करने पर ही विद्या जैसा अनमोल धन पाया जा सकता है। मेहनत के बिना

टेंडर हार्ट हाई स्कूल, 33-बी, चण्डीगढ़।
कक्षा - पाँचवी दिनांक - 03 अगस्त, 2020
विषय - हिन्दी साहित्य उपविषय - सीख (दोहे)
अध्यापकों के नाम - श्रीमती रोमा रानी

पाठ - 7 'सीख' (दोहे)

इसे कोई प्राप्त नहीं कर सकता। उसी प्रकार पंखे की हवा भी उसके हिलने के बिना नहीं मिल सकती। अर्थात अध्ययन हो या हवा परिश्रम के बिना नहीं मिल सकते।

गृहकार्य -

उपरलिखित पाठ्यक्रम को दोहों के साथ तीन से चार बार पढ़ें ताकि इनमें दी गई शिक्षा को जीवन में उतारा जा सके।

- इस पाठ के शब्द-अर्थ हिन्दी साहित्य की नोट बुक पर लिखें।
- उपरलिखित कविता के सरलार्थ सिर्फ समझने हैं, लिखने नहीं।

संत कवि - 'कबीर' जी।

last Page

Scanned with CamScanner